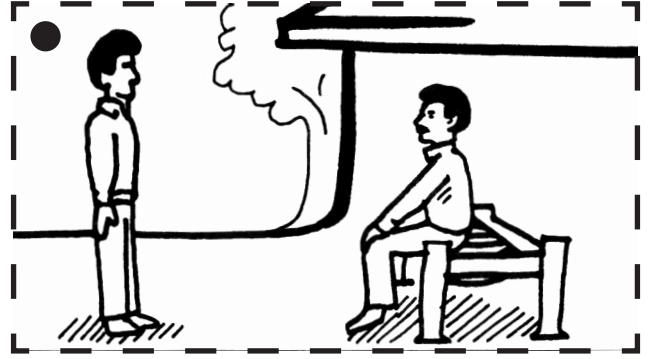


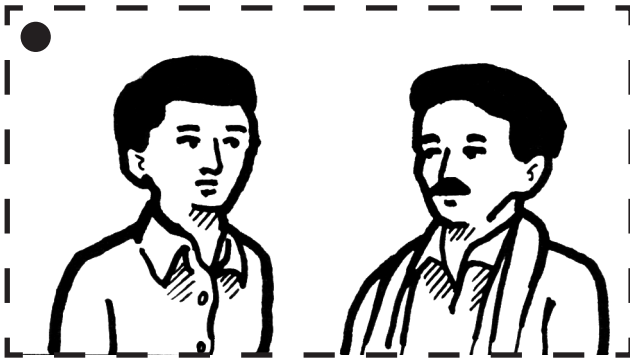
शॉट्स के प्रकार



बहुत दूर का शॉट
परिवेश, आस-पास की जगह, घर इत्यादि दिखाने के लिए



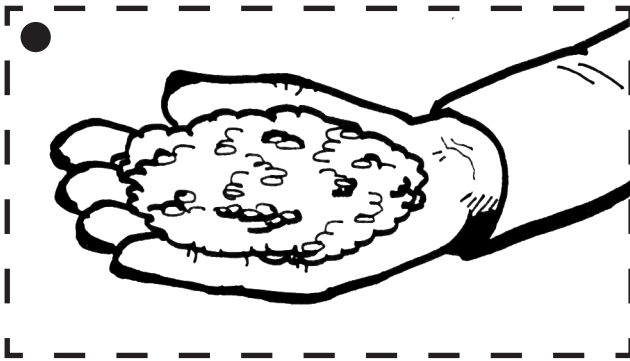
दूर का शॉट
किरदार को सर से पाँव तक दिखाने के लिए



बीच वाला शॉट
किरदार को सर से कमर तक दिखाने के लिए



पास वाला शॉट
किरदार का चेहरा व हाव-भाव दिखाने के लिए



बहुत पास वाला शॉट
किसी भी चीज़ को एकदम साफ़ दिखाने के लिए

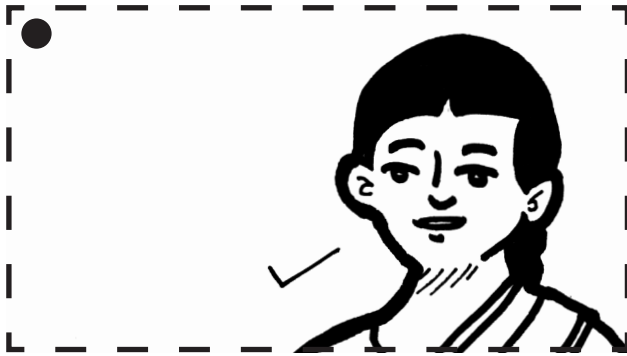
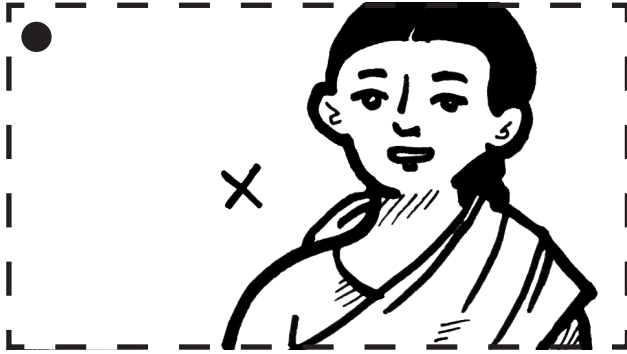


कंधे के पीछे वाला शॉट
दो लोगों के बीच बातचीत दिखाने के लिए

एक अच्छे शॉट का ढांचा एवं उसकी रचना (कम्पोजीशन व फ्रेमिंग)

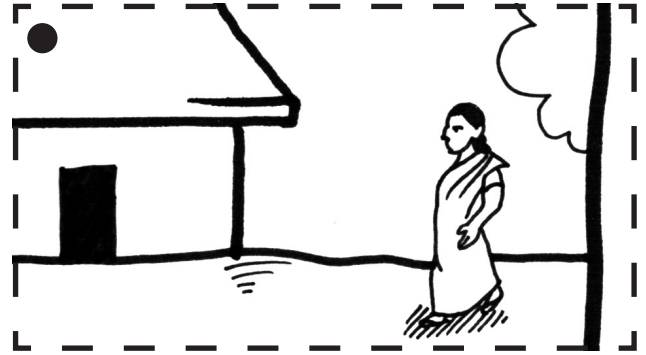
सर के ऊपर पर्याप्त मात्रा में जगह:

कोई भी शॉट लेते समय हमें यह ध्यान रखना चाहिये कि हमें फ्रेम में अपने विषय या किरदार के सर के ऊपर पर्याप्त मात्रा में जगह देनी चाहिये। यदि सर के ऊपर जगह नहीं होगी, तो वह शॉट खराब दिखेगा।



किरदार या विषय के चलने की तरफ पर्याप्त मात्रा में जगह:

जब भी हम अपने शॉट में अपने विषय या किरदार को चलता हुआ दिखाते हैं तो जिस दिशा में वो चल रहा है उधर जगह होनी चाहिए।



एक-तिहाई वाला नियम:

हमेशा शॉट लेते समय हमें अपने किरदार या विषय को अपने फ्रेम के एक-तिहाई वाले भाग में रखना चाहिये। ऐसा करने से हम अपने शॉट को और भी ज़्यादा सुन्दर और दर्शनीय बना सकते हैं। एक-तिहाई वाले नियम का पालन करने से हम अपने किरदार या विषय को बीच में ना रखते हुए उसको समान रूप से सुन्दर दिखा सकते हैं।



किरदार के देखने वाली तरफ पर्याप्त मात्रा में जगह:

किसी भी शॉट को लेते समय हमें इस बात का ध्यान रखना पड़ता है कि हम किरदार या विषय के देखने वाली तरफ पर्याप्त मात्रा में जगह दें। जब भी हमारा विषय कैमरा की तरफ नहीं देख रहा है या फिर फ्रेम से बाहर देख रहा है तो हमें ध्यान देना चाहिये की हम उस दिशा में पर्याप्त और सही मात्रा में जगह दें।



बैकग्राउंड को ध्यान में रखते हुए शॉट लें:

जब कभी भी शॉट ले तो किरदार या विषय के पीछे जो जगह है उस पर अवश्य ध्यान दें। हमें ध्यान देना चाहिये कि विषय के पीछे कोई भी ऐसे चीज़ न हो जो हमारे दर्शको का ध्यान खींचे और उनका ध्यान हमारे किरदार या विषय से हट जाये। एक अच्छा बैकग्राउंड हमारे शॉट को और भी अच्छा बनाता है।



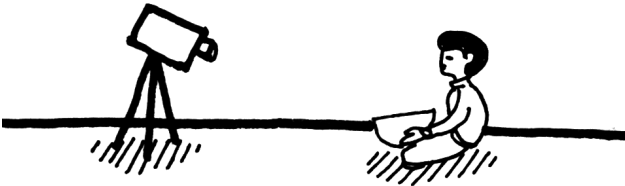
अच्छे शॉट के लिए कुछ सुझाव:

- कैमरा स्थिर रखना और कम से कम १५ सेकंड्स तक शॉट लेना
- अच्छा प्रकाश होना
- सर के ऊपर सही मात्रा में जगह होना
- किरदार जिस दिशा में देख रहा है उस तरफ सही मात्रा में जगह होना
- जिस दिशा में किरदार चल रहा हो उस तरफ सही मात्रा में जगह होना
- शॉट लेते समय किरदार को जोड़ों तक लेना
- एक-तिहाई वाला नियम
- किरदार के पीछे वाली जगह को ध्यान में रख कर ही शॉट लें

कैमरा की विभिन्न स्थिति और घुमाव

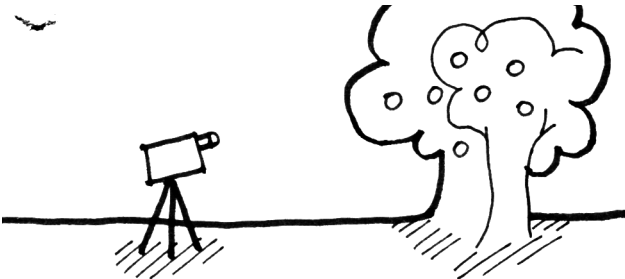
ऊपर से लिए जाने वाला शॉट

जब हमें किसी चीज़ को ऊपर से दिखाना पड़े तो हम ऊपर से लिए जाने वाले शॉट का इस्तेमाल करते हैं. इस शॉट में कैमरा ऊपर रहता है, शूट करने वाली चीज़ नीचे होती है. कभी कभी हमें किसी सामग्री या वस्तु को दिखाने की ज़रूरत होती है जो हम सामने से नहीं दिखा सकते तब हम त्रिपाद को लम्बा कर कैमरे से ऊपर से शॉट लेते हैं.



नीचे से लिए जाने वाला शॉट

जब हम किसी चीज़ को नीचे से दिखाना चाहते हैं, तब हम नीचे से लिए जाने वाले शॉट का इस्तेमाल करते हैं. इस शॉट में कैमरा नीचे रहता है. मानिये अगर हमें किसी फसल में लगे रोग को दिखाना हो जो उस पौधे की पत्ती के नीचे लगा हो तब हम इस शॉट का प्रयोग कर सकते हैं. इसमें हमें त्रिपाद को बिल्कुल नीचे कर कैमरे को ऊपर की तरफ करना पड़ता है.



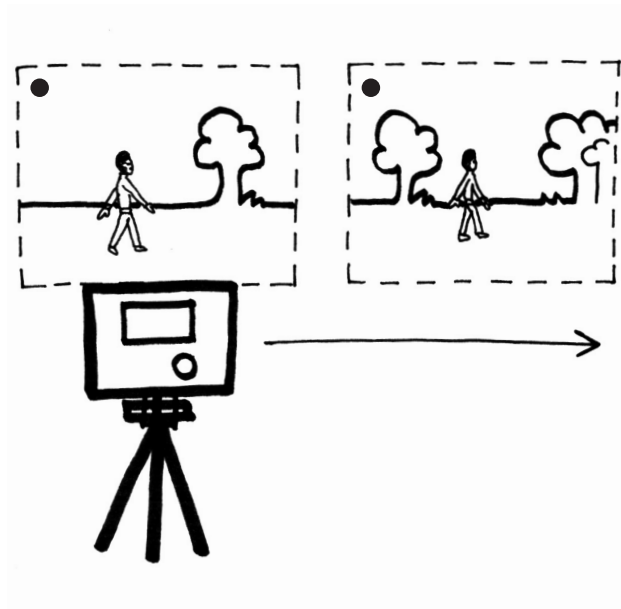
आँखों के स्तर वाला शॉट

जब हम अपने कैमरे को अपने विषय के स्तर पर स्थित कर के शॉट लेते हैं तब ऐसे शॉट को हम आँखों के स्तर वाला शॉट बोलते हैं. जब भी दो लोग आपस में बात कर रहे हैं, या कोई किसी समूह को सम्बोधित कर रहा है, तब हम कैमरा को आँखों के स्तर पर ही रखते हैं. यदि लोग बैठे हुए हैं तो त्रिपाद को नीचे कर कैमरे को उनके स्तर तक लाएं, ताकि हम आँखों के स्तर पे ही शूट कर सकें. जब तक कोई खास कारण न हो तब तक ऊपर से नीचे या नीचे से ऊपर वाला शॉट इस्तेमाल नहीं करते, और आँखों के स्तर वाला शॉट ही इस्तेमाल करते हैं. हम अपने विडियो में सबसे ज़्यादा आँखों के स्तर वाले शॉट का प्रयोग करते हैं.



पैन

जब हम कैमरे को दाहिने से बाहिने या बाहिने से दाहिने तरफ घुमाते हैं तो कैमरे के इस संचालन को हम पैन करना या पैनिंग बोलते हैं. इसके इस्तेमाल से हम किसी व्यक्ति या किसी चीज़ को दाहिने से बाहिने या बाहिने से दाहिने तरफ जाते हुए दिखा सकते हैं. इसमें हम कैमरे को त्रिपाद पर कस कर, सिर्फ दाएं - बाएं घुमाने वाला लॉक खोल के उसको दाहिने से बाएं या बाएं से दाहिने तरफ बहुत धीरे धीरे चलते हैं. हमको पूरी कोशिश करनी होती है कि इस संचालन में किसी भी प्रकार के झटके ना आयें.

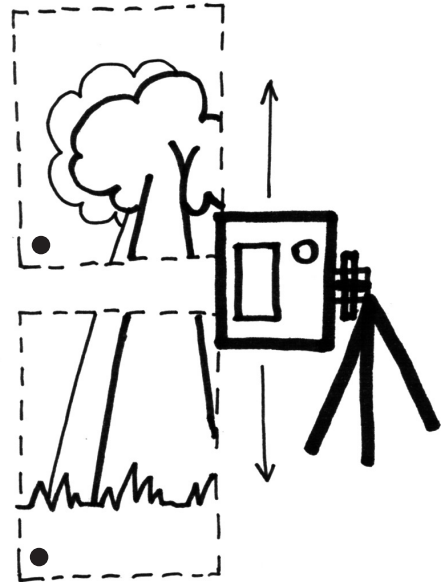


ज़ूम

कैमरा में जो लेंस होती है वह कैमरा से सामान्य दूरी पे दिखने वाली वस्तु को पास भी दिखा सकती है। इसे हम ज़ूम कहते हैं। हर कैमरे में ज़ूम का विकल्प होता है जिसके द्वारा हम इसका प्रयोग कर सकते हैं. ज़ूम के विकल्प से हम किसे चीज़, वस्तु, या हो रही प्रक्रिया को करीब से दिखा सकते हैं. जब रिकॉर्डिंग हो रही हो, तब हमें ज़ूम का इस्तेमाल नहीं करना चाहिये और कोशिश यही करनी चाहिये की हम अपने विषय के पास कैमरा ले कर जाएँ.

टिल्ट

जब हम कैमरे को ऊपर से नीचे या नीचे से ऊपर करते हैं, तो कैमरे के इस संचालन को हम टिल्ट बोलते हैं. जब हमें किसी चीज़ को ऊपर से नीचे या नीचे से ऊपर दिखाना हो तब हम कैमरा टिल्ट करते हैं. इसमें हम कैमरे को त्रिपाद पर कस कर, सिर्फ ऊपर-नीचे मोड़ने वाला लॉक खोल के उसको ऊपर से नीचे या नीचे से ऊपर बहुत धीरे धीरे चलते हैं. हमें पूरी कोशिश करनी होती है की इस संचालन में किसी भी प्रकार के झटके ना आयें.



रोशनी

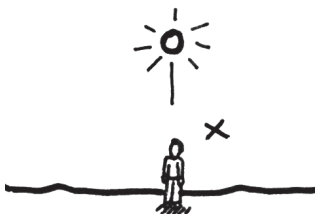
- रोशनी के अलग अलग स्रोत होते हैं, यह दो प्रकार के होते हैं प्राकृतिक और कृत्रिम
- रोशनी की तीव्रता अलग अलग हो सकती है जैसे सामान रोशनी , बहुत कम रोशनी और बहुत ज्यादा रोशनी .
- हमारी रोशनी का स्रोत किस तरफ है इसका ध्यान रखना ज़रूरी है। लोगो या चीजों के ऊपर रोशनी जब सामने से पड़ती है , तब अच्छी लगती है .

रोशनी के प्रयोग पर कुछ सुझाव:

- विडियो शूटिंग का सबसे सही समय सुबह और शाम होता है क्योंकि इन दो वक्त धूप बहुत तेज़ नहीं होती है, जो शूटिंग करने के लिए उचित है.
- सूर्योदय से एक घंटे बाद तक और सूर्यास्त के एक घंटे पहले से शूटिंग करने के लिए सबसे उचित और उपयुक्त माना जाता है इसलिए इसको हम 'सुनहरे घंटे' के नाम से भी जानते हैं. इस समय रोशनी मंद होती है, इस समय शूटिंग करने से विषय के रंग खिल कर उभर आते हैं और इसके साथ ही साथ इस समय कोई तेज़ या कठोर परछाई का निर्माण नहीं होता और सारी वस्तुओं पर एक समान रोशनी पड़ती है.



- हमें भरी दोपहर में शूटिंग करने से बचना चाहिये क्योंकि दोपहर को शूटिंग करने का सही समय नहीं समझा जाता है, इसके साथ ही साथ दोपहर में शूटिंग करने से विषय की आँखों के नीचे भी परछाई का निर्माण हो जाता है.

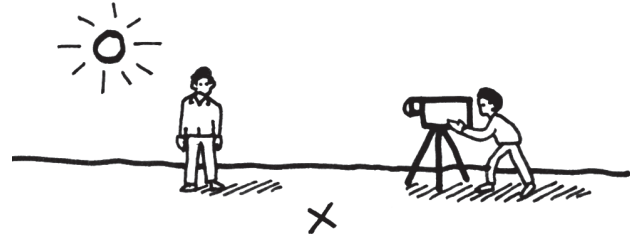


कैमरा रखने की जगह:

- हमारा कैमरा तेज़ और धीमी रोशनी में प्रतिक्रिया नहीं करता है जिसके कारण हमें हमेशा बाहर शूटिंग करने का प्रयास करना चाहिए
- बाहर - हम कोई भी इंटरव्यू बाहर ले सकते हैं, जहां छाँव या समान रोशनी हो. बिल्कुल धूप के नीचे शॉट न लें. ध्यान रखें कि सूरज विषय की पीछे न हो.
- अंदर- अंदर शूटिंग करते समय हमें बाहर से आनी वाली रोशनी और अंदर में रोशनी का ख्याल रखना पड़ता है.
- हमें कभी खिडकियों को फ्रेम में रखते हुए अपनी शूटिंग नहीं करनी चाहिये.
- शूटिंग करते समय हमारे विषय का चेहरा हमेशा रोशनी की ओर होना चाहिये.



- हमें शूटिंग करते समय ध्यान रखना चाहिये की विषय के पीछे रोशनी का स्रोत न हो.

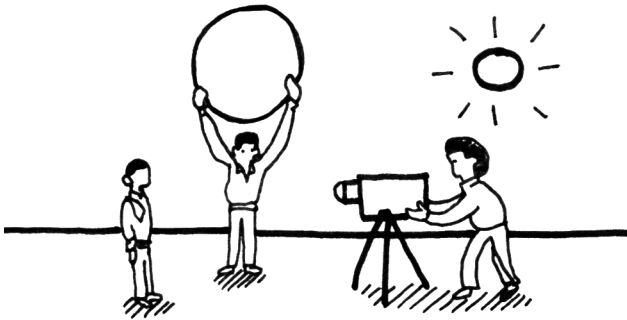


- हमें इस बात का ध्यान देना चाहिये की हमारा कैमरा और हमारा विषय एक ही प्रकार की रोशनी में हो. अगर विषय छाया में है तो कैमरा को भी छाया में होना चाहिये और अगर विषय रोशनी में है तो कैमरा को भी रोशनी में रखना चाहिये.
- हमको अपने फ्रेम में चमकदार वस्तुओं का प्रयोग नहीं करना चाहिये क्योंकि वो बहुत रोशनी वापस फेंकती है.

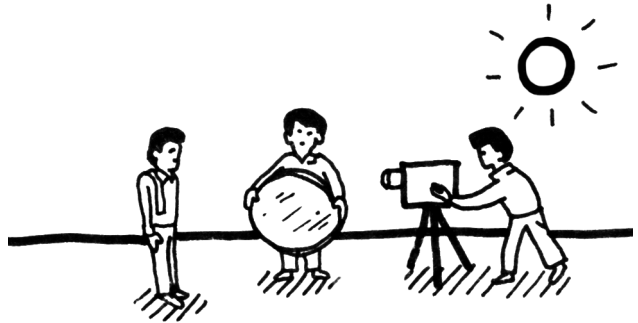
- सही कंट्रास्ट पाने के लिए हमारे विडियो के किरदारों को चटक रंग के या सफ़ेद रंग के कपड़े पहनने से बचना चाहिये इसके साथ ही साथ शूटिंग करते समय हमारे किरदारों को पतली धरी वाले कपड़े और काले चश्मे पहनने से भी बचना चाहिये.

रिफ्लेक्टर और डिफ्यूज़र का इस्तेमाल:

- जब हमको विषय पर गिरने वाली रौशनी को मंद करना हो तब हमें डिफ्यूज़र का प्रयोग करना चाहिये, हम डिफ्यूज़र की जगह एक बड़े गहरे रंग के कपड़े का भी इस्तेमाल कर सकते हैं.



- हम अँधेरे वाले हिस्सों में रौशनी डालने के लिए रिफ्लेक्टर का इस्तेमाल कर सकते हैं.
- हमें दी गई चीजों से भी रिफ्लेक्टर बनाने की कोशिश करनी चाहिये जैसे सफ़ेद (वाइट) बोर्ड, पोस्टर के पीछे वाला हिस्सा अदि.



आवाज़ या ध्वनि

आवाज़ या ध्वनि विडियो शूटिंग का बहुत महत्वपूर्ण भाग है. लोग एक खराब शॉट देख कर उसके बारे में समझ सकते हैं पर अगर उसमें क्या कहा जा रहा है वह नहीं सुन पाएंगे तो हमारा पूरा प्रयास ही खराब हो जाता है. जैसा की हमें मालूम है कि हमारा उपकरण आस-पास का शोर रिकॉर्ड कर लेता है इसलिए हमें शूटिंग करते समय ज़्यादा ध्यान रखने की ज़रूरत है.

आवाज़ या ध्वनि के अलग अलग प्रकार होते हैं

- इंटरव्यू देने वाला- सिर्फ इंटरव्यू देने वाले की आवाज़
- वार्तालाप- दो या दो से ज़्यादा लोगो के बीच हो रही बात चीत
- कथन- एक वाचक/नैरेटर, फिल्म निर्माता या फिर प्रतिभागी हो सकता है
- पीछे से आनी वाली आवाज़ें- शूटिंग में बाधा या रुकावट डालने वाली आवाज़ें
- कुदरती आवाज़- ऐसी प्राकृतिक आवाज़ें जो विडियो में डालने से उसका प्रभाव और बढ़ा देती है, उदाहरण के तौर पर मवेशियों की आवाज़, बारिश की आवाज़ इत्यादि .
- संगीत- संगीत ज़्यादातर विडियो एडिटिंग के समय डालते हैं
- शांति/चुप्पी- किसी भी आवाज़ या ध्वनि की अनुपस्थिति

गाँव में आवाज़ रिकॉर्ड करने के लिए कुछ सुझाव

- हमें इंटरव्यू बंद कर देना चाहिये अगर आवाज़ खराब आ रही हो. माइक चेक कर के फिर से रिकॉर्डिंग करनी चाहिए
- हमें हमेशा अपना ऑडियो रिकॉर्ड करते ही चेक करना चाहिये। हमें विडियो वापस चला कर एक बार ज़रूर देखना चाहिये और इस बात की पुष्टि कर लेनी चाहिये की हर जगह विडियो ठीक से रिकॉर्ड हुआ है और उसमें आवाज़ ठीक आई है या नहीं.
- हमें उन किरदारों का चयन करना चाहिये जिनकी आवाज़

बहुत धीमी ना हो और साफ़ हो

अच्छी आवाज़ के लिए:

- माइक को हमेशा सही दूरी पर रखना या पकड़ना ज़रूरी है, ना ज़्यादा पास और न ही ज़्यादा दूर, कि रिकॉर्ड हुई आवाज़ फट जाये या सुनाई ही ना दे
- अभिनेता या हमारे किरदारों को हमेशा अपने आवाज़ की मात्रा ऊपर ही रखनी चाहिये
- जब आप किसी इंटरव्यू में साउंड मॉनिटर कर रहे हैं तो कुछ चीज़ों का ख्याल रखना ज़रूरी है जैसे आवाज़ कहीं फट तो नहीं रही है, आवाज़ कहीं ज़्यादा धीमे तो नहीं, मोटर साइकिल/ गाड़ी की आवाज़ें तो नहीं आ रही हैं इत्यादि

अनावश्यक आवाज़ से बचने के लिए:

अगर हम तार वाले माइक का इस्तेमाल कर रहे हैं तो हमें ध्यान रखना होगा की हमारे फ्रेम में वो तार ना दिखें हमको इस बात का सही तरह से ध्यान देना पड़ेगा कि इंटरव्यू देने वाला माइक या माइक के तारों को न छुए जिससे किसी भी प्रकार की अनावश्यक आवाज़ उत्पन्न हो. हमें अपने माइक को कभी भी हवा की दिशा में नहीं रखना चाहिये या फिर ऐसी किसी भी जगह जहाँ अनावश्यक आवाज़ें आ रही हो जैसे पानी के पंप की आवाज़, गाड़ियों के चलने की आवाज़ आदि.

डिफ्यूज़र का इस्तेमाल तेज़ हवा को थोड़ा रोकने के लिए किया जा सकता है

उपकरण

सुनिश्चित करें कि रिकॉर्डिंग के समय माइक्रो फ़ोन चालू हो और जब रिकॉर्डिंग न हो रही हो तो माइक्रो फ़ोन बंद हो. इस बात का ख़ास तौर से ध्यान दे की आपके माइक्रो फ़ोन ठीक तरह से विडियो कैमरे में लगे हो

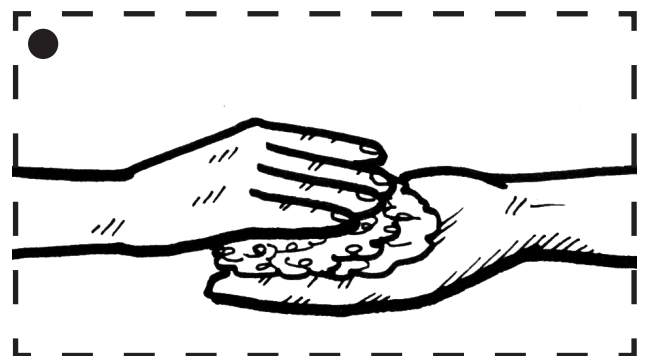
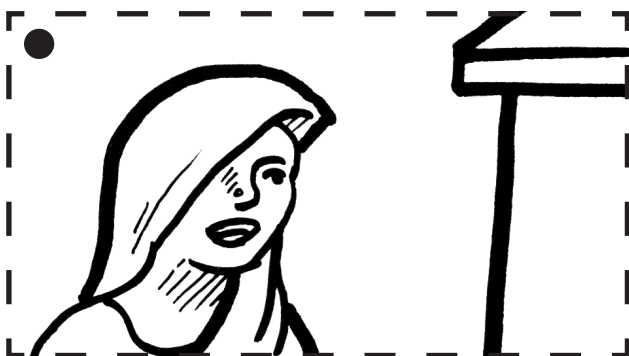
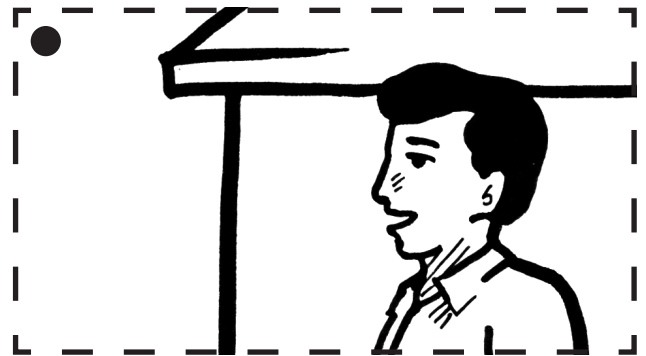
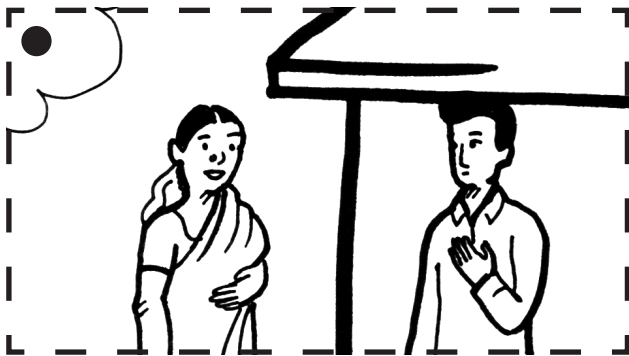
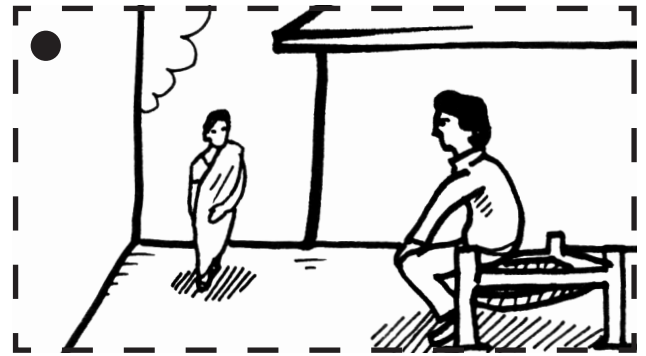
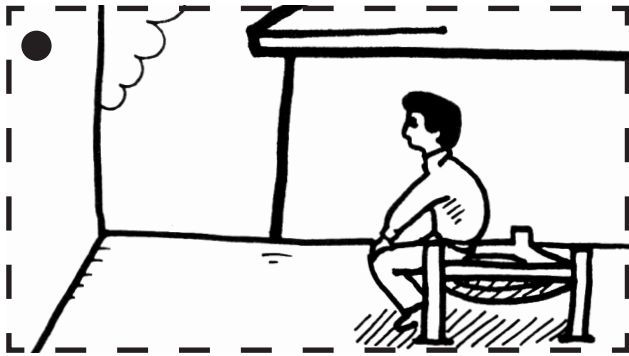
सीन बनाना

एक शॉट: जब हम कैमरे में रिकॉर्डिंग वाला बटन दबा कर रिकॉर्डिंग शुरू करते हैं से ले कर जब हम रिकॉर्डिंग वाला बटन बंद करते हैं इस दौरान कैमरे में जो कुछ भी रिकॉर्ड होता है उसको हम एक शॉट बोलते हैं।

एक सीन: अलग अलग शॉट्स का क्रम मिलकर एक सीन बनता है ये सारे शॉट्स जो एक सीन बनाते हैं एक दूसरे से सम्बंधित होते हैं

सीन बनाने के लिए कुछ सुझाव-

सबसे पहले अपने लक्ष्य को निर्धारित करें, की आप क्या शूट करना और दिखाना चाहते हैं। इसके बाद आप अलग-अलग शॉट्स के बारे में सोचें। सबसे ज़रूरी है कि आपके सारे शॉट्स आपके केंद्रीय या मुख्य विषय से जुड़ने चाहिये। उदाहरण के तौर पर शुरुआती सीन में पहले शॉट में हम गाँव का परिवेश दिखा सकते हैं, एक बहुत दूर वाले शॉट से। फिर एक VRP भैया को आते हुए दिखा सकते हैं दूर वाले शॉट में। बीच वाले और कंधे के पीछे वाले शॉट्स द्वारा उनके और दीदी के बीच में हो रही चर्चा को दिखा सकते हैं।



VRP भैया कोई सामग्री इत्यादि दिखा रहे हों तो उसे पास के अथवा बहुत पास के शॉट्स द्वारा दिखा सकते हैं। यह अलग अलग शॉट्स को जोड़ कर हम एक सीन बना सकते हैं

- सीन में हर शॉट का कोई अर्थ होना चाहिये जो हमें बतलाये की कहानी आगे बढ़ रही है.
- हमें हमेशा अलग अलग प्रकार के शॉट्स लेने चाहिये इससे नीरसता दूर होगी और साथ ही साथ हम उन पहलुओं पर ज़ोर दे पायेंगे जिनको हम अपने विडियो में लेना चाहते हैं

कहानी बनाने के लिए कुछ सुझाव:

कई शॉट्स मिला कर एक सीन बनता है व कई सीन्स को मिलाकर पूरी वीडियो बनती है। वीडियो हम एक कहानी के द्वारा दिखाते हैं। हर कहानी में तीन भाग होते हैं -

शुरुआती भाग: जिसमें गांव, किरदार व विषय का परिचय दिया जाता है। इस भाग में हम यह भी दिखाते हैं, कि किरदार किस चीज़ को ले कर संघर्ष कर रहे हैं। उदाहरण के तौर पर, एक महिला को बैंक से ऋण चाहिये पर उसे इसका तरीका नहीं मालूम.

बीच वाला भाग: इसके बाद आने वाले अधिकतर सीन्स में हम संघर्ष का विवरण देंगे या उसके बारे में और अधिक बताने की कोशिश करेंगे, और साथ में ही उसके अलग अलग पहलुओं के बारे में भी बताते हैं. बीच वाला भाग

विडियो का सबसे बड़ा वाला हिस्सा बनता है, इससे भाग में हमारे प्रश्न और उत्तर, स्पष्टीकरण या व्याख्या, प्रदर्शन आदि होता है.

आखिरी भाग: इस भाग में हम समस्या का हल होते हुए दिखाएंगे। हमारे विडियो एक खुशी के बिंदु पर खत्म होने चाहिए, जो हमारे दर्शकों को विडियो में दिखाई गयी बात को अपनाने के लिए प्रेरित करें.

उदाहरण के तौर पर डिजिटल ग्रीन के विडियो में आने वाले कुछ सीन:

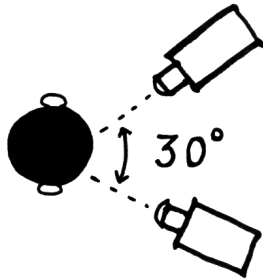
- पहला सीन जो एक गाँव दिखा रहा हो (इसमें गांव के अलग-अलग शॉट्स होंगे)
- दूसरा सीन जो आपके मुख्य किरदार को दिखा रहा हो (किरदार को उसका काम करते हुए दिखाएंगे, जैसे कि स्वयं सहायता समूह की सचिव)
- तीसरा सीन जिसमें एक महिला चर्चा कर रहीं हैं जिसमें वो एक स्वयं सहायता समूह से जुड़ने की बात कर रही हैं और एक दूसरा व्यक्ति सुझाव देता है इसके लिए उनको स्वयं सहायता समूह की सचिव से मिलना पड़ेगा.
- चौथे सीन में वह महिला सचिव से मिलने जाती हैं.
- पांचवे सीन में महिला स्वयं सहायता समूह की सचिव से स्वयं सहायता समूह के बारे में पूछती है, व सचिव उसे उसके फायदे बताती है
- आखिरी सीन में दिखाते हैं कि महिला समूह की सदस्य बन कर खुश है क्योंकि उसे अपने काम के लिए आराम से लोन मिल जाता है

दृश्य की निरंतरता

अगर हम चाहते हैं की हमारी विडिओ स्वभाविक लगे तो विडिओ देखते समय लोगों के सामने अलग अलग शॉट्स बहुत ही आराम से एक से दूसरे पर जाने चाहिए। दो शॉट्स के बीच एक सहजता/निरंतरता होनी चाहिए। दर्शक को यह नहीं लगना चाहिए कि अचानक से कुछ और ही सामने आ गया है। इससे विडिओ अस्वाभाविक लगेगी। अगर हम कुछ नियमों का पालन शूटिंग के दौरान करेंगे, तो हम शॉट्स के बीच निरंतरता बनाए रख सकते हैं।

अलग अलग शॉट्स लेना:

दृश्य की निरंतरता बनाए रखने के लिए हमें अलग-अलग प्रकार के शॉट्स का इस्तेमाल करना चाहिये। जैसा की हमें मालूम है कि कई प्रकार के शॉट्स होते हैं, जरूरत के अनुसार हम अलग शॉट्स ले सकते हैं। उदाहरण के तौर पर जब दीदी सावधानी के बारे में बता रही हैं तो बीच वाला शॉट इस्तेमाल कर सकते हैं और जब वह सन्देश दे रही है, तो उनका पास वाला शॉट लिया जा सकता है।



३० डिग्री वाला नियम:

जब हम एक ही जगह अपना कैमरा रख कर, एक ही चीज़ शूट कर रहे हों, और कैमरा की रिकॉर्डिंग कई बार बन्द और चालू कर के एक ही तरीके का शॉट ले रहे हो, तो इन शॉट्स को एक साथ देखते समय दृश्य में एक झटका सा दिखेगा और बहुत प्राकृतिक नहीं लगेगा। मान लीजिए कोई किसान दीदी बाकी दीदीयों को किसी खेती की तकनीक पर सावधानियां और सन्देश दें रहीं है, तो ऐसा कई बार होता है की हमारी दीदी एक बार में सभी वाक्य नहीं बोल पाती हैं। उस समय हमको अपना कैमरा बंद कर के अलग-अलग वाक्यों के अलग से शॉट्स लेने पड़ते हैं। इसमें निरंतरता बनाए रखने के लिए हमें ३० डिग्री वाला नियम मानना चाहिए। यह नियम ये बतलाता है की हमें दो शॉट्स के बीच में कम से कम ३० डिग्री का अंतर रखना चाहिये। ३० डिग्री से ज़्यादा अगर हम कैमरा को दूर रखते हैं तो शॉट बदलने पर हमें झटका नहीं दिखेगा और दृश्य में कोई अनिरंतरता नहीं मालूम पड़ती।

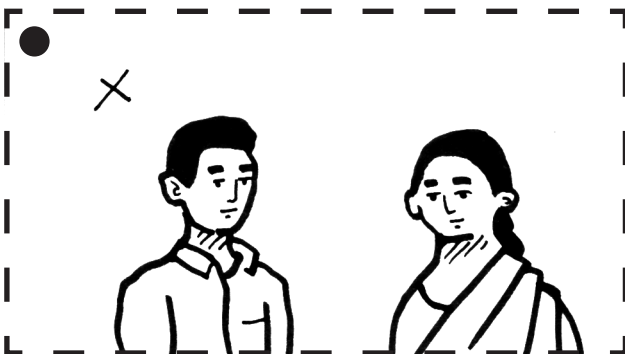
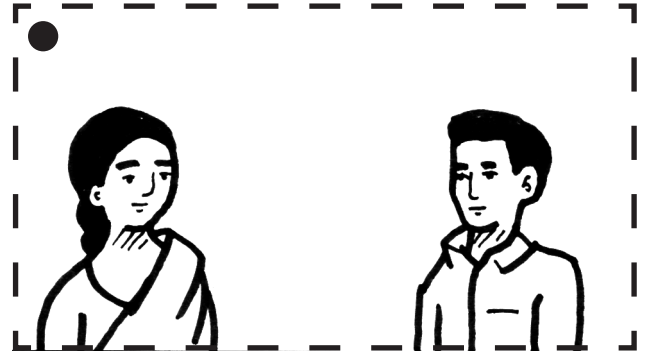
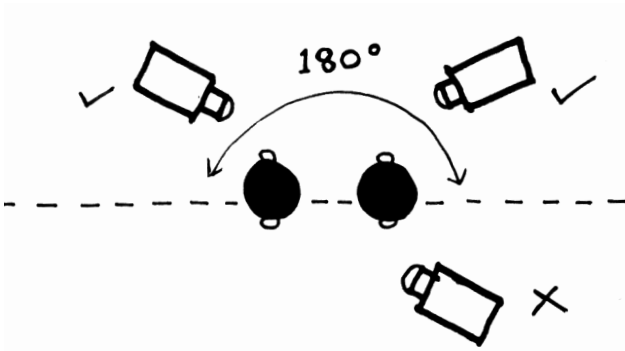


१८० डिग्री वाला नियम:

१८० डिग्री वाला नियम एक उदाहरण के माध्यम से हम समझते हैं, मान लीजिये जीविका सहेली किसी गर्भवती महिला के घर उनसे संतुलित आहार के बारे में बात करने आती हैं। जीविका सहेली और दीदी एक दूसरे के सामने बैठ कर बात करती है। अब ज़रूरी यह है, कि हमारा कैमरा पूरे समय, अलग-अलग शॉट्स लेते समय एक ही तरफ रहे और दूसरी तरफ ना जाए। यदि जीविका सहेली कैमरा के बाईं तरफ हैं तो वो उसी तरफ रहें और दीदी दायीं तरफ हैं तो उसी तरफ रहें। अगर हम अपना कैमरा दूसरी तरफ ले जाते हैं तो हम १८० डिग्री वाले नियम का उलंघन कर देंगे और ऐसा करने से जीविका सहेली कैमरे के दाहिने तरफ नज़र आएंगी और जिन दीदी से वो बात कर रही हैं वो बाएं तरफ। यह हमारे दर्शकों को देखने में अजीब लगेगा, इसलिए शूटिंग करते समय हमको हमेशा १८० डिग्री वाले नियम का पालन करना चाहिये।

फ्रेम से अन्दर और बाहर निकलना:

पहले वाले नियम की तरह ही हमें दिशा का ध्यान रखना होता है, जब लोग हमारे फ्रेम में अंदर आते हैं और बाहर जाते हैं। जैसे यदि कोई दायें से बाएं जा रहा है, तो वो हमारे फ्रेम में दायें से अंदर आएगा और बाएं दिशा में चलेगा, व फ्रेम से निकल जाएगा। अब जब हम उनका दूसरा शॉट लेंगे, जैसे कि वो जब घर के अंदर आ रहा है, तो फिर हम उन्हें दाएं से अंदर आते हुए ही दिखाएंगे।



विडियो में सवाल-जवाब का उदाहरण

जब भी हम किसी विडियो में अपने किरदार के साथ कोई बातचीत या वार्तालाप करते हैं तो हमारे पास हमेशा सवालों की एक सूची होनी चाहिये। हमे हमेशा खुले सवाल पूछने चाहिये, मतलब ऐसे सवाल जिनसे हमे विस्तृत जवाब मिलें ना कि ऐसे जवाब जो बस हाँ और ना में ही खत्म हो जाएँ। हमे ऐसे सवाल पूछने चाहिये जिससे हमें विडियो के विषय के बारे में ज़्यादा जानकारी मिले

उदाहरण के तौर पर नीचे दी हुए सूचि को ध्यान में रखे, ज़रूरी नहीं है की आप इस सूचि का पालन करें पर यह सूचि आप को किस तरह के सवाल पूछने हैं उसमे ज़रूर मदद कर सकती हैं

- आपका नाम क्या है?
- आप कहाँ रहते/रहती हैं?
- क्या आप अपने परिवार के बारे में थोडा सा बता सकते/सकती हैं?
- आप क्या काम करते/करती हैं?
- आपने विडियो में देखाई हुए बिन्दुओं को क्यों अपनाया?
- आप ने यह कहाँ से सीखा?
- आप यह कितने दिनों से कर रही हैं?

- इसमे क्या क्या सामग्री इस्तेमाल हुई हैं?
- इसमें सामग्री की कितनी कितनी मात्रा लगी है?
- आप यह सामग्री कहाँ से लाए?
- अगर हमको यह सब सामग्री नहीं मिलती तो हमारे पास और क्या विकल्प हैं?
- आप इस प्रक्रिया या कार्य को कैसे कर सकते हैं? इस प्रक्रिया के क्या क्या और कितने कितने चरण हैं?
- आपको यह कार्य या प्रक्रिया कब करनी चाहिये?
- इसको करने में कितना समय लगता है?
- इसको करने में क्या क्या सावधानियां रखनी पड़ती हैं?
- इसको करने में क्या क्या दिक्कतें आती हैं?
- इन दिक्कतों को हम कैसे हल कर पाएंगे?
- क्या इस कार्य या प्रक्रिया से जुड़ा कोई भ्रम हैं?
- इस प्रक्रिया से क्या फयदा हैं?
- कोई और सुझाव जो आप देना चाहेंगे?
- वह लोग जो यह प्रक्रिया देख कर इसको अपनाना चाहते हैं उनको आप कोई संदेश देना चाहते हैं?

शूटिंग के लिए कुछ सुझाव

योजना/प्लानिंग:

- हमेशा ये ध्यान रखे की आपके पास शूटिंग करने की सहमति हो
- हमें शूटिंग करने से पहले उसकी जांच सूचि एक बार देखनी चाहिये
- इंटरव्यू को जाने से पहले हमे उसकी एक दिन पहले पुष्टि कर लेनी चाहिए
- अगर शूटिंग के दौरान किसी सामग्री की ज़रूरत है तो उसकी पहले से व्यवस्था कर लीजिए
- हवा की आवाज़ से बचने के लिए हमे अपनी पूरी शूटिंग खुले मैदान/ खेत में नहीं रखनी चाहिये
- हमें अपनी शूटिंग के लिए एक अच्छी जगह की व्यवस्था कर लेनी चाहिये
- अच्छी जगह का मतलब ऐसी जगह जहाँ सही तरह से रौशनी आए और देखने में भी सुन्दर हो
- अपने किरदारों के लिए ऐसे लोगों का चयन कीजिये जिनकी आवाज़ साफ़ और तेज़ हो
- हमारे लोगों का समय कीमती है इसलिए हमें शूटिंग एक निर्धारित समय पर शुरू और खत्म कर देनी चाहिये

शूटिंग के वक़्त दिए जाने वाले संकेत-

- साइलेंस या शांति
- साउंड या आवाज़ चेक, रिकॉर्ड दबाएँ
- गिनती करें ... १, २, ३
- एक्शन या चालू
- अब अपना विडियो और किरदारों को रिकॉर्ड करें
- कट या रुकें
- कैमरा संचालक गिनें ... १, २, ३
- रिकॉर्डिंग रोक दें

त्रिपाद-

- हर शॉट को लेने के लिए त्रिपाद का ही इस्तेमाल करें
- इस्तेमाल करने से पहले त्रिपाद को लॉक कर दें
- हर बार त्रिपाद के इस्तेमाल से पहले उसके पारे का स्तर या स्पिरिट लेवल जांच लें

शॉट लाने से पहले-

- हमें अपने शॉट्स को अच्छे से फ्रेम करना चाहिये जिसमे पीछे आने वाली चीज़ें सुन्दर और दिलचस्प हो
- जहाँ आप शूटिंग कर रहे हैं उस जगह को आप कैमरे से अलग अलग फ्रेम में देख लें
- स्टोरीबोर्ड में दिए गए शॉट्स और उनमे होनी वाली प्रक्रियों को आप पहले से तैयार कर लें और सोच लें
- हमें शूट ऐसी जगह करनी चाहिये जहाँ शांति हो
- हमे कोशिश करनी चाहिये की हमारे किरदार सफ़ेद या धारीदार कपड़े न पहने
- हमे शूटिंग के समय ध्यान रखना चाहिये की किरदार के पीछे वाली जगह सफ़ेद ना हो
- हमको अपने किरदारों को हर शॉट में उनकी स्थिति और स्थान के बारे में सूचित कर देना चाहिये
- हमको पक्का कर लेना चाहिये की हमारे किरदारों पर सही मात्रा में रोशनी पड़ रही हो

शॉट लेते समय-

- कम से कम एक शॉट की अवधि ६-१० सेकंड होनी चाहिये
- हमें पैनिंग और टिल्टिंग का कम से कम प्रयोग करना चाहिये
- रिकॉर्डिंग करते समय हमें ज़ूम नहीं करना चाहिये
- हमको अपने स्टोरीबोर्ड के हिसाब से अलग अलग प्रकार के शॉट्स लेने चाहिये
- हर शॉट के बाद हमे उसकी आवाज़ सुन लेनी चाहिये
- कहानी से जुड़े हमको और शॉट्स भी लेने चाहिये जैसे खेतों के, वस्तुओं के, काम करते हुए किसान का शॉट इत्यादि
- इसके साथ ही साथ हम ऐसे भी शॉट्स ले सकते है जिसमे व्यक्ति अपनी दैनिक दिनचर्या वाले काम भी कर रहा हो, उदाहरण के तौर पर अपने घर के काम, काम को जाने के लिए तैयार होना आदि.
- आप विडियो प्रोडक्शन टीम में अपनी निर्धारित भूमिका को ही निभाएं